नमाज़ में

सूरह फ़ातेहा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है
सब तअरीफ़े अल्लाह तआला के लिए है ।जो सब जहानों का पालनहार है। हम उसी से मदद और माफ़ी चाहते है। अल्लाह की लाताद सलामती , रहमते, और बरकतें, नाज़िल हों मुहमद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम पर और आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर ।

व बअद।

अपने आप मे नमाज़ जितनी अहम है ।उतना ही अहम तरीक़ा ऐ नमाज़ भी है ।नमाज़ के बारे मे हुक्म सिर्फ यही नही है कि इसे अदा करो, बल्कि हुक्म यह भी है कि नमाज़ उस तरह अदा करो जिस तरह मुझे नमाज़ अदा करते हुए देखते हो।(बुखारी631–अबुदाउद–823) कयामत के दिन अल्लाह के हुकूक मे से सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा। जिसकी नमाज़ नबी सल्ल के बताए तरीक़े के मुताबिक़ पढ़ी गई होगी वह कामयाब होगा और जिसकी नमाज़ नबी सल्ल, के अलावा किसी और के बतलाए सिखलाए तरीक़े जैसी होगी वह नाकाम होगा। (तिर्मीज़ी –351) रोजे कयामत नमाज़ के बारे मे जहां यह देखा जाएगा कि कितनी नमाजे़ पढ़ी, वहीं हिसाब इस बात का भी होगा कि नमाज़ सुन्नते रसुल सल्ल, के मुताबिक़ पढ़ी गई हे या नही ?

इसके बावजुद नमाज़ के कुछ मसाइल है जिनमे उम्मत सदियों से इख्तिलाफ़ की शिकार है और जो जिस तरीक़े पर है , वो उसी को हक व सही समझे हुए है। ऐसा ही एक मसअला नमाज़ मे सुरह फा़तेहा का पढ़ना भी है । इस बात पर तो सब एक राय है कि इमाम और मुनफ़रिद हर नमाज़ की हर रकअत मे सुरह फ़ातेहा पढ़ेगा ।यह उसके लिए ज़रूरी है लेकिन इख्तिलाफ़ यहां है कि मुक़तदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला) इसे पढ़े या नही? उम्मत का एक गिरोह इससे इन्कार करता है बल्कि यहां तक कहता है कि इमाम के पीछे सुरह फा़तेहा पढ़ने वाले के मुंह मे कयामत के दिन आग के अंगारे डाले जाएगें । हालां कि यह सख्ती पहले के उलेमा मे न थी। बल्कि पहले के कुछ उलेमा ने अदमे क़िराअत (न पढ़ने) को सिर्फ़ अफ़जल कहा है । उन के नज़दीक अगर मुक़तदी सुरह फा़तेहा पढ़ ले तो जाइज़ है। उसकी नमाज मे कोई खराबी नही आऐगी। (नसबुर राय –जिल्द–2 सफ़ा –13) इसी तरह (तअलीक़ अल मुमजद–सफ़ा 95) मे हे अहले कूफ़ा (अहनाफ़) ने इमाम के पीछे सुरह फ़ातेहा न पढ़ने को सिर्फ पसन्द किया है। यह नही कि वो पढ़ने को न जाइज़ कहते है। तो (फ़तवा अल सुबकी जिल्द2सफ़ा 148) मे है, अगर मुक्तदी इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ लेगा तो उसकी नमाज़ सब के नज़दीक सही होगी। हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर रह, ने इस बात पर उलेमा का इज्माअ नक़ल किया है कि उसकी नमाज़ पूरी है, लौटाने की ज़रूरत नही।, और दूसरा गिरोह कहता है। जो ''सूरह फ़ातेहा

नही पढ़ेगा' उसकी नमाज़ नही होगी। चाहे वह इमाम हो, मुनफ़रीद हो, मुक़तदी हो, मुसाफ़िर हो, या मुक़ीम और नमाज़ चाहे जहरी हो या सिर्री। हर एक को हर नमाज़ मे सूरह फ़ातेहा का पढ़ना जरूरी है।

इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने की अहादीसे सहीहा

(1)'' जिस शख़्स ने सूरह फ़ातेहा नही पढ़ी। उसकी नमाज़ नही है।''(बुख़ारी–756, मुस्लिम–622, नसाई–913, अबु दाऊद–822,) अल्लामा अेयनी हनफ़ी रह. लिखते है–''इस हदीस से अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक, इमाम औजाई, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, इमाम इसहाक़, इमाम अबु सौर और इमाम दाऊद रह. वगैरह ने इमाम के पीछे सब नमाज़ो मे सूरह फ़ातेहा पढ़ने के वाजिब होने पर दलील पकड़ी है।'' (उम्दतुल कारी–जिल्द 3 सफ़ा –64)

अल्लामा सिन्धी हनफ़ी रह. लिखते है–'' हक़ बात यह है कि जिस नमाज़ मे सूरह फ़ातेहा न पढ़ी जाए। इस हदीस की रू से उस नमाज़ का बातिल होना साबित होता है।'' (हाशिया बुख़ारी–जिल्द1 सफ़ा 95)

(2) उबादा रज़ि. का बयान है कि फज्र की नमाज़ हम नबी सल्ल. के पीछे पढ़ रहे थे। आप सल्ल. ने क़िरअत की तो आप सल्ल. पर पढ़ना दुश्वार हो गया। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया '' शायद तुम अपने इमाम के पीछे पढ़ते हो।'' हमने कहा 'हाँ' ऐ अल्लाह के रसुल सल्ल. हम जल्दी –जल्दी पढ़ते है तो आप सल्ल. ने फ़रमाया '' कुछ न पढ़ा करो मगर सूरह फ़ातेहा । क्यों कि जो शख़्स इसे न पढ़े, उसकी नमाज़ नही होती।''(अबु दाऊद–823, तिर्मिज़ी,–269– सही) अब्दुल हई हनफ़ी रह. कहते है कि '' उबादा रज़ि. की इस हदीस से जो सही है । अल्लाह के रसुल सल्ल. का हुक्म मुक़तदी के लिए सूरह फ़ातेहा पढ़ने के बारे मे साबित हो चुका है।'' (सआया–सफ़ा–303)

(3) नाफ़ेअ बिन मेहमुद ने कहा कि (ऐक दिन) उबादा रज़ि. को सुबह की नमाज़ मे देर हो गई तो अबु नईम मुअज़्ज़िन ने लोगो को नमाज़ पढ़ानी शुरू कर दी।(बाद मे) उबादा रज़ि. भी आ गये और मैं आपके साथ था। हम अबु नईम के पीछे खड़े हो गये। वह बुलन्द आवाज़ से क़िरअत हर रहे थे। उबादा रज़ि. ने सूरह फ़ातेहा पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद मैने उबादा रज़ि. से कहा मैने आपको सूरह फ़ातेहा पढ़ते हुए सुना है। हालां कि अबु नईम बुलन्द आवाज़ से क़िरअत कर रहे थे तो उबादा रज़ि. ने फ़रमाया '' हां '' (एक दफ़ा) रसुल सल्ल. ने हमे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई तो आपको पढ़ने मे परेशानी हुई। नमाज़ से फ़रागत के बाद आप सल्ल. ने हमारी तरफ़ मुख़ातिब हो कर फ़रमाया '' जब मै बुलन्द आवाज़ से क़िरअत करता हूँ तो क्या तुम कुछ पढ़ते हो ?'' हम मे से कुछ ने कहा ''हां'' हम पढ़ते है।तब आप सल्ल. ने फ़रमाया '' जब मै बुलन्द आवाज़ मे पढ़ूं तो तुम क़ुरआन मे से सिवाए सूरह फ़ातेहा के कुछ न पढ़ा करो।'' (अबु दाऊद–824, नसाई–921, बैहक़ी–सही) अनवर शाह काश्मीरी देवबन्दी रह. लिखते है '' यह हदीस इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने के बारे मे अंगुठी के चमकते हुए नगीने की तरह है।(फ़सलुल ख़िताब –सफ़ा–147) ''

(4) कोई शख़्स नमाज़ पढ़े और (उसमें) सूरह फ़ातेहा 'न पढ़े तो वह नमाज़

नाक़िस है' नाक़िस है, पूरी नही है।'' (मुसलिम–625, अबु दाऊद–821, मोत्ता इमाम मोहम्मद –115) अल्लामा ज़रकानी रह. 'शरह मोत्ता जिल्द1 सफ़ा 159' पर लिखते है'' यह हदीस हर नमाज़ मे सूरह फ़ातेहा के फर्ज़ होने पर मज़बुत दलील व हुज्जत है।' शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी हनफ़ी 'अशअता अल लमआत' जिल्द1 सफ़ा 372 मे लिखते है '' इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा आहिस्ता पढ़ कि खुद सुन सके।' ऐसा ही शाह वलीउल्लाह रह. ने ' शरह मोत्ता जिल्द 1सफ़ा–106 पर और मुल्ला अली क़ारी रह. ने 'मिशक़ात जिल्द1 सफ़ा –520'पर लिखा है।

(5) जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. कहते है '' हम (सहाबा किराम रज़ि.) बयान किया करते थे कि '' कोइ नमाज़ बग़ैर सूरह फ़ातेहा के किफ़ायत नही करती।''(मुसनफ़ इब्ने अबि शैअबा –जिल्द 1 सफा–361')

कुछ लोग इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने की अहादीस को रद्द करने के लिए यह कहते है कि शुरू इस्लाम मे वाक़ई सब सहाबा किराम आप सल्ल. के पीछे इसे पढ़ा करते थे। लेकिन बाद मे इसका पढ़ना मक्का ही मे मन्सुख़ हो गया था। हांला कि वो इस दावे की कोई दलील नही रखते ।' ' (नमाज़ मे सूर फ़ातेहा –सफ़ा–83)

इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा और अइम्मा किराम रह.

इमाम नोवी रह. '' हमारा मज़हब यह है कि नमाज़ मे सूरह फ़ातेहा पढ़ना ज़रूरी है। जो शख़्स इसे पढ़ सकता है, उसकी नमाज़ इसके पढ़े बिना सही नही। जम्हूर सहाबा किराम रज़ि., ताबईन, रह. और अइम्मा रह. इसी के क़ायल है 'कि सूरह फ़ातेहा हर नमाज़ मे हर शख़्स के लिए ख़्वाह इमाम हो, या मुक्तदी,या मुनफ़रिद पढ़ना ज़रूरी है और इब्ने अब्बास रज़ि., अबु हुरेरा रज़ि., अबु सईद खुदरी,रज़ि. और ख़वात बिन जबीर रज़ि., साथ ही अइम्मा मे इमाम ज़हरी रह.'' इब्ने ऊन रह., औजाई रह., इब्ने मुबारक रह. , अहमद बिन हम्बल रह., इसहाक़ रह., और सौर रह., से ऐसा ही नक़ल किया है।' (अल मजमुआ– जिल्द3 सफ़ा–327)

इमाम तिर्मिज़ी रह. '' अक्सर अहले इल्म से सहाबा रज़ि., ताबईन रह. ,और उनके बाद वाले अइम्मा जैसे इमाम मालिक रह., शाफ़ई रह., इब्ने मुबारक रह., अहमद रह., और इसहाक़ रह., ये सब इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने के क़ायल थे।''(तिर्मिज़ी–जिल्द1 सफ़ा–154)

इब्ने मुबारक रह. – '' में इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ता हूं, और सब लोग इमाम के पीछे पढ़ते है मगर कूफ़ियों की एक क़ौम नहीं पढ़ती (तिर्मिज़ी, जिल्द–1–सफा–155) इमाम ग़ज़ाली रह.–''सूरह फ़ातेहा नमाज़ के फ़राइज़ मे से है और मुक्तदी सूरह फ़ातेहा पढ़े।''(अहया अल उलूम–जिल्द 1, सफ़ा–139)

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह. '' कई सरीह और साफ़ हदीसों से साबित है कि नमाज़ मे सूरह फ़ातेहा पढ़ना ज़रूरी है।' (अअलामुल मौक़िईन–जिल्द2, सफ़ा–286) शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह. '' सूरह फ़ातेहा का पढ़ना फ़र्ज़ और नमाज़ का रूकन है। इसके बिना नमाज़ नही होती।' (गुनया–जिल्द–1, सफ़ा–23)

अबु हनीफ़ा रह. के नज़दीक मुक़तदी के लिए इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा

पढ़ना मुस्तहब है और एक रिवायत के मुताबिक़ वाजिब है।''(शरह मुहज़्ज़ब –जिल्द3,सफ़ा–327)

सूरह फ़ातेहा और अइम्मा ए अहनाफ़ रह.

1अल्लामा एयनी रह. '' हमारे बअज़ फ़ुक़हा हनफ़िया सब नमाज़ों मे मुक़तदी के लिए इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने को बेहतर जानते है।'' (उम्दतुल क़मरी–जिल्द3, सफ़ा–29)

2मुल्ला जीवन रह.'' हनफ़ी मज़हब के बड़े–बडे बुज़ुर्गो को देखोगे तो तुम्हे मालूम हो जाएगा कि ये सब मुक़तदी के लिए सूरह फ़ातेहा पढ़ने को बेहतर जानते थे।'' (तफ़सीर अहमदी –जिल्द 2, सफ़ा–81)

3अबु हफ़्स कबीर रह. (यह इमाम मुहम्मद रह. के शार्गिद है)'' इमाम के पीछे फ़ातेहा पढ़ने के क़ायल थे।''(इमामुल कलाम –सफ़ा –2)

4शैख़ अब्दुर्रहीम रह. '' इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करते थे और कहते थे कि '' क़यामत के दिन मेरे मुंह मे अंगारा हो तो मेरे नज़दीक यह ज़्यादा बेहतर है इस बात से कि मुझसे कहा जाए कि तेरी नमाज़ ही नही हुई।'' (इमामुल कलाम–सफ़ा–20)

5निज़ामुद्दीन औलिया –अब्दुल हई हनफ़ी रह. आपके तज़किरे मे लिखते है कि अल्लामा किरमानी रह. ने 'सीर अल उलैमा ' मे लिखा है''निज़ामुद्दीन औलिया बावजूद हनफ़ी होने के इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करते थे और अपने मुअतक़िदीन से भी पढ़ने को कहा करते थे। किसी मुरीद ने अर्ज़ किया–मरवी है कि जो शख़्स इमाम के पीछे पढ़ता है उसके मुंह मे अंगारा होगा। आपने जवाब दिया कि नबी सल्ल. की हदीस मे हे जो '' शख़्स सूरह फ़ातेहा न पढ़े उसकी नमाज़ नही होती।'' पहली बात मे धमकी है और दूसरी मे नमाज़ का बातिल होना है। लिहाज़ा मै धमकी बरदाशत कर सकता हुँ लेकिन अपनी नमाज़ का बातिल होना नही सह सकता।'' (नुज़हतुल ख़्वातिर –जिल्द2, सफ़ा–126)

6 मख़दूम जहांनिया (जलालुद्दीन बुख़ारी रह) '' मै इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ता हुँ। अगरचे इमाम रूकुअ मे चला जाए मै जब तक सूरह फ़ातेहा पूरी नही पढ़ लेता हुँ रूकुअ नही करता।'' (मलफ़ुज़ात–मख़दूम जहांनिया–जिल्द 2,सफ़ा–665)

7 शम्सुद्दीन मिर्ज़ा मज़हर जाने जाना रह. ''इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने को क़वी बतलाते थे।'' (अबजद अल उलूम –सफ़ा–900) '' नमाज़ मे सीने पर हाथ बांधते थ। इमाम के पिछे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करते थे और तश्हुद मे रफ़ा ए सबाबा करते थे।''(तक़सार–सफ़ा –113)

8 मिर्ज़ा हसन अली लखनवी रह. आपने इस मसअले मे एक रिसाला लिखा है जिसमे इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने को कुतुबे हनफ़िया से साबित किया है। (मसक अल ख़िताम – शरह बलूग़ुल मराम –जिल्द1, सफ़ा–219)

9 शाह अब्दुर्रहीम रह. '' इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करते थे और नमाज़े जनाज़ा मे भी।'' (इन्फ़ासुल आरिफ़ीन –सफ़ा –69)

10 शाह वलीउल्लाह रह. ''अगर इमाम जहर से क़िराअत कर रहा हो तो मुक़तदी इमाम के सकतों मे पढे। मगर मुक़तदी को यह एहतियात रखना

चाहिये कि इमाम को उलझन न हो और पढ़ने का मसलक मेरे नज़दीक सबसे बेहतर है।''(हुज्जतुल्लाहि बालिग़ा–सफ़ा 327–328)

11 मौलाना ज़फ़र अहमद उस्मानी रह.–'' इमाम अहमद रह. के क़ौल मे सिर्री नमाज़ों की क़ैद सराहन मज़कुर है। बल्कि हम अहनाफ़ तो जहरी नमाज़ों मे भी इमाम की क़िराअत से पहले या बाद मे मुक़तदी को सूरह फ़ातेहा पढ़ने की इजाज़त देते है। हम अहनाफ़ यह कहते है कि जहरी नमाज़ों मे इमाम की क़िराअत के साथ क़िराअत करना मना है। इमाम से पहले या बाद मे या सकताते इमाम मे और सिर्री नमाज़ो मे मुक़तदी का फ़ातेहा पढ़ना जाइज़ व पसन्दीदा है। जो लोग सकताते इमाम मे फ़ातेहा पढ़ सके । इसको किसी ने हराम व ना जाइज़ नही कहा । इसी तरह सिर्री नमाज़ों मे भी मुक़तदी के लिए क़िराअत आहिस्ता–आहिस्ता जाइज़ है, जब कि इमाम को परेशानी न हो।'' (फ़ारान – कराची–नवम्बर – दिसम्बर –1960 ई0)

12 अब्दुल हई लखनवी रह. ''इमाम के पीछे मुक़तदी के लिए सिर्री (ज़ुहर व असर) नमाज़ मे फ़ातेहा पढ़ना मुस्तहब है और जहरी नमाज़ो मे भी सकताते इमाम मे पढ़ने की इजाज़त है। मुक़तदी के लिए इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ना सिर्री नमाज़ मे बेहतर है ।

जैसा कि इमाम मुहम्मद रह. ने जब सिर्री नमाज़ मे मुक़तदी के फ़ातेहा पढ़ने को जाइज़ और बेहतर कहा है तो जहरी नमाज़ों मे भी सकताते इमाम मे इसके पढ़ने को जाइज़ व बेहतर कहते होगें क्यों कि जहरी नमाज़ों मे इमाम के सकतात के वक़्त पढ़ने और सिर्री नमाज़ मे इमाम के पिछे पढ़ने मे कुछ फ़र्क नही है।'' (इमामुल कलाम–सफ़ा–156) ''किसी मरफ़ुअ सही हदीस मे इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ने की मनाही नही है और इस बारे मे उलैमा ए अहनाफ़ जिस क़दर दलाइल ज़िक्र करते है, या तो वो बे असल और मनधड़त है या फ़िर सही नही है। कुल मिला कर इमाम के पीछे फ़ातेहा पढ़ने की अहादीस के दर्जे की कोई मुख़ालिफ़ हदीस नही है (तअलीक़ अल मुमजद–जिल्द5, सफ़ा– 278, 298)

13 शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी रह.,– इमाम अबु हनीफ़ा रह. के नज़दीक मुक़तदी को इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ना मना है और मुहम्मद रह. के नज़दीक सिर्री नमाज़ मे इसका पढ़ना जाइज़ व बेहतर है। जब कि इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक इसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नही होती और मेरे नज़दीक भी इमाम शाफ़ई रह. का क़ौल ज़्यादा बेहतर है क्यों कि सही हदीस '' सूरह फ़ातेहा पढ़े बिना नमाज़ नही होती '' से (न पढ़ने पर) नमाज़ का बातिल होना साबित होता है और अबु हनीफ़ा रह. का यह क़ौल जा बजा वारिद है कि '' मेरा क़ौल सही हदीस के खिलाफ हो तो उसे छोड़ दो ।'' इसी तरह ''जब कुरआन पढ़ा जाए तो ख़ामोश रहो'' आयत का मतलब है कि जब इमाम सूरह फ़ातेहा पढ़ने के बाद दूसरी सूरत मिलाए तो मुक़तदी ख़ामोश होकर सुने। न कि यह ख़ामोशी सूरह फ़ातेहा के लिए है क्यों कि सूरह फ़ातेहा बअज़ अहादीस की बिना पर इस आयत से मुस्तसना (अलग) है तमाम बहस का सार यह है कि मुक़तदी को इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा जरूर पढ़ना चाहिये। इस तरह कि जब इमाम सकता करे तो मुक़तदी पीछे पढ़ता रहे और जब इमाम आमीन पर पहुचे तो सब बुलन्द आवाज़ से

आमीन कहें कहे क्यों कि इस बारे मे भी सही बुख़ारी वग़ैरह मे हदीस आई है। पस लाज़िम है कि मुक़तदी इमाम के पीछे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करे । ताकि हदीसे रसूल सल्ल. की मुख़ालफ़त न हो।'' (नमाज़ मे सूरह फ़ातेहा–सफ़ा–129से132)

नमाज़े जनाज़ा मे सूरह फ़ातेहा–

जिस तरह आम नमाज़ों मे हर शख़्स के लिए सूरह फ़ातेहा का पढ़ना ज़रूरी है। उसी तरह नमाज़े जनाज़ा मे भी हर शख़्स के लिए सूरह फ़ातेहा पढ़ना सुन्नत और ज़रूरी है। इसलिए कि आप सल्ल. और सहाबा रज़ि. नमाज़े जनाज़ा मे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करते थे।

(1) तल्हा बिन अब्दुल्लाह बिन औफ़ कहते है कि मैने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. के पीछे एक जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी तो इब्ने अब्बास रज़ि. ने सूरह फ़ातेहा पढ़ी और (बाद नमाज़) फ़रमाया कि (मैने सूरह फ़ातेहा को जनाज़े मे इसलिए पढ़ा है ताकि)'' तुम जान लो '' (नमाज़े जनाज़ा मे) सूरह फ़ातेहा पढ़ना सुन्नत है। (बुख़ारी–1335, अबु दाऊद–3198 , तिर्मिज़ी –90–)

(2) जाबिर रज़ि. ने बयान किया कि ''अल्लाह के रसूल सल्ल. हमारे जनाज़ो की नमाज़ पर चार तकबीरें कहा करते थे और पहली तकबीर मे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करते थे।'' (मुस्तदक हाकिम –जिल्द 1, सफ़ा –358 और बैहक़ी–जिल्द 4 सफ़ा–39)

(3) उम्मे शरीक अंन्सारिया रज़ि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने हमे हुक्म दिया कि ''हम नमाज़े जनाज़ा मे सूरह फ़ातेहा पढ़ा करे ।''(इब्ने माजा–1496–सही)

(4) शाह वली उल्लाह रह.–नमाज़े जनाज़ा मे सूरह फ़ातेहा पढ़ना सुन्नत है।'' (हुज्जतुललाहि बालिग़ा–सफ़ा–375)

(5) क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती हनफ़ी रह.–''अक्सर उलैमा का यह मसलक है कि नमाज़े जनाज़ा मे सूरह फ़ातेहा पढ़ी जाए। और मेरी नमाज़े जनाज़ा जमाअते कसीर के साथ अदा की जाए और इमाम पहली तक्बीर के बाद सूरह फ़ातेहा पढ़े।''(माला बुदमना–सफ़ा–82)

(6) मौलाना अब्दुल हई हनफ़ी रह.– ''नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातेहा मुस्तहब या सुन्नत समझकर पढ़ना राजेह है क्योंकि इसका सुबूत बहुत सी अहादीस में है। जिन उलैमा ने इसे मकरूह लिखा है तो ब नीयत क़िराअत लिखा है न के सना की नीयत से पढ़ना। उनके पास एक दलील भी नहीं है जो इसे मकरूह साबित करें। अल्लामा हसन हनफ़ी रह. ने एक रिसाला लिखकर साबित किया है कि नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातेहा पढ़ना बेहतर है न पढ़ने से (इमामुल कलाम, सफा–233)

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाएं और आप सल्ल. की सुन्नत के मुताबिक नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ दें।

आमीन!

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

मो. 9214836639

9887239649